Department of Philosophy
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR, MADHUBANI (BIHAR)
(A Constituent unit of L. N. Mithila University K. Nagar, Darbhanga)
Paper II Westren Philosophy (BA Part I H.)

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lacture No. 12, Sept.
September 11, 2020

BA Part I H

पूर्व स्थापित सामंजस्य का नियम

(Docotrine of Pre-established harmony)

लाइबनिज़ के दर्शन में चिदणु गवक्षाहीन हैं। सभी चिदणु स्वतंत्र एवं क्रियाशील हैं। लाइबनित्ज़ के समक्ष यह एक जटिल समस्या है कि यदि सभी चिदणु एक-दुसरे से स्वतंत्र हैं तो उनमें कोई संबंध कैसे संभव है? सृष्टि में एकरूपता, व्यवस्था और नियमबद्धता कैसे हो सकती है? आत्मा और शरीर के चिदणुओं में परस्पर संबंध कैसे हो सकता है? इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए लाइबनित्ज़ ने पूर्व स्थापित सामंजस्य के नियम का प्रतिपादन किया है।

पूर्व-स्थापित सामंजस्य-नियम के अनुसार **ईश्वर ने सभी चिदणुओं को स्वतंत्र बनाया है। ईश्वर ने उन्हें इस प्रकार बनाया है कि वे एक दूसरे से स्वतंत्र होते हुए भी परस्पर एकता के सूत्र में बंधे हुए हैं।**

चिदणुओं की यह एकता अथवा सामंजस्य ईश्वर ने उनमें पहले ही स्थापित कर दिया है। इस सार्वभौम पूर्व स्थापित सामंजस्य नियम के कारण प्रत्येक चिदणु स्वतंत्र होते हुए भी विश्व की एकता और सामंजस्य को बनाए रखता है। जब ईश्वर ने चिदणुओं को बनाया, तो उसी समय उनमें परस्पर सामंजस्य स्थापित कर दिया। **यह सामंजस्य चिदणुओं के स्वभाव में ही निहित है।** लाइबनित्ज़ ने इसकी उपमा आर्केस्ट्रा (Orchestra) से दी है यद्यपि प्रत्येक वाद्य यंत्र की अपनी अलग अलग स्वर लहरी (सुरीली आवाज) होती है, तथापि इन वाद्य यंत्रों का विशिष्ट स्वर परस्पर सामंजस्यपूर्ण होता है। इसके परिणाम स्वरूप एकतान संगीत की उत्पत्ति होती है।

लाइबनित्ज़ के अनुसार, यद्यपि ईश्वर ने सभी चीजों को स्वतंत्र बनाया है, तथापि उन्हें ऐसा बनाया गया है कि वे स्वभावतः सामंजस्य पूर्ण हो। वे पारस्परिक सामंजस्य के साथ-साथ अपनी चेतन शक्ति का विकास करते हैं। चिदणुओं का अंतिम लक्ष्य परम चिदणु (ईश्वर) की अवस्था को प्राप्त करना है। इससे स्पष्ट है कि चिदणुओं की वैयक्तिकता (विशिष्टता) और अनेकता के होते हुए भी उनमें लक्ष्य की एकरूपता है। प्रत्येक चिदणु का परम श्रेय सर्वोच्च बनना है। यहाँ पर लाइबनित्ज़ का दर्शन स्पिनोजा से भिन्न हो जाता है। स्पिनोज़ा के नियतिवाद के विपरीत लाइबनित्ज़ प्रयोजनवादी हैं।

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lacture No. 12, Sept.
September 11, 2020

अपने पूर्वस्थापित सामंजस्य-नियम के द्वारा लाइबनित्ज़ डेकार्ट और स्पिनोजा के दर्शन की एक अत्यंत जटिल समस्या आत्मा और शरीर के संबंध का भी समाधान करते हैं। लाइबनित्ज़ के अनुसार आत्मा और शरीर में किसी प्रकार का यांत्रिक संबंध नहीं है। द्वैतवादी होने के कारण डेकार्ट आत्मा और शरीर में अंतर्क्रिया या क्रिया प्रतिक्रिया का संबंध मानते हैं, वही स्पिनोजा ने आत्मा और शरीर के द्रवयात्मक द्वैत को गुणात्मक द्वैत में बदल दिया। वह विचार और विस्तार को परस्पर समानांतर मानते हैं। लाइबनित्ज़ ने इनमें से किसी भी सिद्धांत को स्वीकार नहीं किया। वह डेकार्ट के अनुयायियों के द्वारा प्रतिपादित संयोग वाद को भी नहीं स्वीकार करता है। लाइबनित्ज़ कहते हैं कि आत्मा के चिदणु समूहों और शरीर के चिदणुओं में उनकी सर्जना के समय से ही सामंजस्य एवं साहचर्य पाया जाता है। इस प्रकार आत्मा और शरीर का संबंध पूर्व स्थापित सामंजस्य के नियम पर आधारित है।

लाइबनित्ज़ विश्व की जैविक अवयवी (Organic) अवधारणा पर विशेष बल देते हैं। ईश्वर ने विश्व की व्यवस्था इस प्रकार किया है कि उसे विश्व में हस्तक्षेप नहीं करना पड़ता है। विश्व में पूर्ण सामंजस्य है। यद्यपि विश्व में प्रत्येक वस्तु की व्याख्या यांत्रिक ढंग से की जा सकती है क्योंकि उनमें एक व्यवस्था, नियम और एकता है; किंतु यह नियम, व्यवस्था और एकरूपता किसी न किसी उच्च लक्ष्य की ओर संकेत करती है। यह परम लक्ष्य ईश्वर ही हो सकता है जिसे सृष्टि का मूल आधार कहा जा सकता है। ईश्वर ही समस्त घटनाओं का प्रमुख कारण और अंतिम लक्ष्य है। जगत् की सभी वस्तुएं परस्पर संबद्ध है। जगत् में घटित होने वाली प्रत्येक घटना का प्रभाव संसार के हर एक पिंड में देखा जा सकता है। जब लाइबनित्ज़ चिदणुओं को गवक्षाहीन कहता है, तो इसका निहितार्थ यह नहीं है कि वे परस्पर एक दूसरे से पूरी तरह असंबद्ध हैं। लाइबनित्ज़ के कहने का निहितार्थ यह है कि चिदणुओं में किसी प्रकार का दैशिक और कालिक संबंध नहीं है। देश और काल के अंतर्गत आने वाले यांत्रिक संबंधों में से चिदणु मुक्त है, क्योंकि वह स्वरूपतः आध्यात्मिक (चेतन) हैं। पूर्वस्थापित सामंजस्य चिदणुओं के बीच में आध्यात्मिक (आंतरिक) संबंध का विधान करता है, क्योंकि यह संबंध ईश्वर के द्वारा स्थापित किया गया है। लाइबनित्ज़ के अनुसार जिसे यांत्रिक संबंध समझा जा रहा है वह एक उच्च स्तरीय आंतरिक संबंध पर निर्भर करता है। इससे स्पष्ट है कि एक चिदणु पर अन्य चीजों का प्रभाव तार्किक दृष्टि से पड़ता है। वस्तुतः यह प्रभाव ईश्वरकृत है। अतः विश्व की व्यवस्था आध्यात्मिक है।

लाइबनित्ज़ ने प्रकृति की यांत्रिक व्यवस्था और दैवी कृपा पर आधारित नैतिक व्यवस्था में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया है। ईश्वर इस विश्व रूपी मशीन

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

(चिदणुओं की सामंजस्यपूर्ण व्यवस्था) का श्रष्टा है। वह व्यष्टि रूप में एक -एक चिदणु का रचयिता नहीं है, बल्कि संपूर्ण विश्व की सामंजस्यपूर्ण-व्यवस्था का श्रष्टा है। अतः प्रत्येक चिदणु अपने जन्म से पहले ही विद्यमान है। उसका श्रष्टा होने के साथ-साथ ईश्वर इस व्यवस्था का नियामक और सर्वोच्च शासक है। चूंकि चिदणुओं का आविर्भाव ईश्वरीय चमत्कार हुआ है, इसीलिए वे ईश्वरीय इच्छा से ही नष्ट हो सकते हैं। ईश्वर के द्वारा बनाई गई यह व्यवस्था चिदणुओं में निहित है, जिसे 'पूर्वस्थापित सामंजस्य का नियम' कहा जाता है।

यह सिद्धांत अत्यंत विवादास्पद है। ईश्वर पूर्वस्थापित सामंजस्य के नियम का श्रष्टा होते हुए भी चिदणु होने के कारण स्वयं भी इस नियम से बंधा हुआ है। अतः रसल में इस सिद्धांत की कटु आलोचना की है। उनके अनुसार गवक्षाहीन चिदणुओं के लिए इस नियम की कोई उपयोगिता नहीं प्रतीत होती। चिदणुओं की गवाक्षहीनता, उनकी शाश्वत-श्रृंखला एवं उनके सामंजस्यपूर्ण संबंध इत्यादि मान्यताएं परियों की कहानियों जैसा तिलिस्मी गल्प प्रतीत होता है। इस प्रकार लाइबनित्ज़ का दर्शन एक मानसिक व्यायाम मात्र प्रतीत होता है। रसल के अनुसार चिदनुवाद और ईश्वरवाद दोनों सिद्धांत साथ-साथ नहीं चल सकतेहैं। यदि ईश्वर को की सामंजस्यपूर्ण व्यवस्था का श्रष्टा माना जाए तो ईश्वर स्वयं की चिदणु कैसे हो सकता है? यदि चिदनुवाद को स्वीकार कर लिया जाए तो ईश्वर को चिदणुओं की व्यवस्था का श्रष्टा नहीं माना जा सकता। वस्तुतः प्रत्येक चिदणु अपने विकास की अंतिम अवस्था में ईश्वरत्व को प्राप्त कर सकता है। *ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे लाइबनित्ज़ के दर्शन में ईश्वर बलात् थोप दिया गया हो। रसल के अनुसार ईश्वर बाग विनीत के दर्शन का एक ढोंग है। उनका वास्तविक दर्शन चिदणुवाद है।

किंतु यदि रसल की इस आलोचना को स्वीकार कर लिया जाए तो लाइबनित्ज़ का संपूर्ण दर्शन ही ध्वस्त हो जाता है। उल्लेखनीय है कि पूर्वस्थापित सामंजस्य नियम के बिना चिदणुवाद की स्थापना नहीं की जा सकती। चूंकि इस सर्वभौम नियम का सूत्र धार ईश्वर है, इसलिए ईश्वर के अभाव में सामन्जस्य नियम की व्याख्या नहीं की जा सकती। वस्तुतः लाइबनित्ज़ के चिदनुवाद में ईश्वर की अवधारणा अपरिहार्य हो जाती है। यह आलोचना अतिशयोक्ति पूर्ण है कि ईश्वर लाइबनित्ज़ के दर्शन का पाखंड है।